प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंद जी सरस्वती दण्डी स्वामी जी

विषय तालिका

CD # 55 - B * OCT 2012 *

SN	Title	Min	Coding	Contents	
1	OCT 01.mp3	33		**गीता - २/२८ :** पंचमहाभूतों के कार्य ये जड़ देह जन्म के पहले व मृत्यु के बाद नहीं रहते हैं केवल मध्य में ही दिखाई पड़ते हैं अतः असत हैं, इनको देखने वाला चेतन मैं ब्रह्म ही हूँ जो नित्य है - अर्जुन, तत्त्वमसि । एक सच्चिदानंद सिन्धु ही सत्य हैं जिसमें तरंग रूपी भूत-प्राणी उत्पन्न-विलीन होते रहते हैं, जो आदि-अंत में नहीं होते वे मध्य में भी नहीं होते अतः वे मिथ्या हैं	
2	OCT 02.mp3	54		**गीता - २/३० :** देही संसार के देहों के भीतर रहता है व सभी देहों को देखता है, वह नित्य और अवध्य है, वही हमारा - तुम्हारा स्वरूप है जो यह जानता है वह मुक्त है । **शरीरोपनिषद ::** जीव के मायाकृत ३नों शरीर-रचनाका सविस्तार वर्णन	
3	OCT 03.mp3	42		**गीता - २/३० : देह और देही २ तत्त्व हैं,** देह में रहने व देखने वाला नित्य-अवध्य **देही** है, जीव की भाँति **ईश्वर के भी तीन शरीर** हैं :: १ समष्टि स्थूलदेह-**विराट**, २ समष्टि सूक्ष्मदेह-**हिरण्यगर्भ/ब्रह्मा**, ३ समष्टि कारणदेह-**अव्याकृत/माया/प्रकृति । हमारा स्वरूप** ४था, ३नों से असंग **द्रष्टा साक्षी चेतन-आत्मा** है । ३ शरीरों के अंतर्गत् जा०-स्व०-सु०, ३ अवस्थाऐं व ५ कोष भी हैं	
4	OCT 04.mp3	40		सुख-दुःख, लाभ-हानि, जय-पराजय को समान समझ कर एवं देहाभिमान बिना युद्ध करने से सारे संसार के हनन से भी पाप नहीं लगता क्योंकि देह इ०म०बु० प्राण जीव को भगवान ने दिये हैं तथा 'श्रुति-स्मृति/स्वधर्म का पालन करने की भगवान की आज्ञा है, भगवान जगत के माता-पिता, गुरु एवं राजा हैं, अपने धर्म का पालन करने वाले से भगवान प्रसन्न होते व उसकी रक्षा करते हैं	
5	OCT 05.mp3	50		कर्म की गति गहन है अतः **कर्म-विकर्म-अकर्म** को जानना चाहिये, जगतगुरु भगवान कृष्ण के वचन को श्रवण कर लक्ष्य बार मनन + निधिध्यासन करना चाहिये, **वेद-विहित** कर्मों को **कर्म/धर्म** तथा **वेद-विरुद्ध** कर्मों को **विकर्म** कहते हैं, ४रों वर्णों के धर्म निरूपण	१
6	OCT 06.mp3	70		**गीता -४/१७-१८ :** कर्म-विकर्म के आधार अधिष्ठान को **अकर्म** कहते हैं जैसे अचल अकर्म अधिष्ठान आकाश में वायु अग्नि जल रहते व चलते हैं उसी भाँति सारे कर्म आत्मारूपी अधिष्ठान में भासित प्रकृति में होते है किंतु आत्मा एकरस व अकर्म है । **प्रेयसुख** - बुद्धि में आत्मा के प्रतिबिम्ब द्वारा इन्द्रियों से विषय ज्ञान आभास सुख एवं आत्मानंद ही **श्रेयसुख** है :: जैसे सुषुप्ति में	२
7	OCT 07.mp3	54		**गीता -४/१७-१८ :** कर्म की गति गहन है अतः **कर्म-विकर्म-अकर्म** को जानना चाहिये, वेद त्रिकाण्डमय हैं, **कर्मकाण्ड :-** वर्णाश्रम पदाधिकारानुसार किये जाने वाले 'वेदविहित' कर्म ही **कर्म** हैं इनके २ प्रकार हैं - **१ विशेष २ सामान्य**-अहिंसा,सत्य,अस्तेय,ब्रह्मचर्य	३
8	OCT 08.mp3	42	संपूर्ण सामान्यधर्म	**गीता -४/१७-१९ : सामान्यकर्म**-अहिंसा,सत्य,अस्तेय,ब्रह्मचर्य,अपरिग्रह,अक्रोध,गुरुसुश्रूषा,शौच,संतोष,आर्जवम्। जिसके संपूर्ण शास्त्र सम्मत कर्म बिना कामना/संकल्प के होते हैं तथा जिसके कर्म ज्ञानरूपी अग्नि द्वारा भस्म हो गये हैं उसे ज्ञानीजन पंडित कहते हैं	४
9	OCT 09.mp3	31		सीताजी का हनुमानजी को **भ० राम का निनि०** स्व०निरूपण व **ज्ञान-वैराग्य** का उपदेश **-'रामं विद्धि परंब्रह्म सच्चिदानंद अद्वयं'**	
10	OCT 10.mp3	35		**गीता -४/१७-१९ : कर्म-विकर्म-अकर्म** को जानना चाहिये, श्रुति-स्मृति मेरी आज्ञा है उसका पालन ही **सामान्य एवं विशेष** कर्म या **धर्म** है, वेद विरुद्ध कम **विकर्म** हैं, विकर्म करने वाला मेरे द्वारा दण्ड पाता है, **४ प्रकार के भक्त**-आर्त अर्थार्थी जिज्ञासु ज्ञानी	५
11	OCT 11.mp3	30		**गीता -४/१७-१८ :**कर्म-विकर्म के आधार अधिष्ठान को **अकर्म** कहते हैं, सभी देह इ० मन बुद्धि प्राण पंचभूतों से, पंचभूत तीन गुणों से, ३ गुण मेरी छायारूप माया से होते हैं, मैं इन सबका आधार अधिष्ठान सत्-चित्-आनंद हूँ वही हमारा आत्मा/ब्रह्म है	६
12	OCT 12.mp3	44		**दो ब्रह्म हैं** - १ **परमब्रह्म/सच्चि०** २ **शब्द ब्र०**-वेद जिसमें यर्थाथरूप से ब्रह्म तत्त्व बताया गया है, वेद त्रिकाण्डमय है - **कर्मकाण्ड** :: **सकामकर्म** से संसार एवं **निष्कामकर्म** से चित्तशुद्धि, फिर भक्ति-ज्ञान-वैराज्ञ द्वारा भगवान मिलते हैं, **भक्तिकाण्ड** :: श्रीमद्भागवत् में **नवधाभक्ति** १श्रवणं २कीर्तनम् ३स्मरणं ४पाद सेवनम् ५अर्चनं ६वन्दन७दास्यं ८सख्यं ९आत्म निवेदनम्	अ
13	OCT 13.mp3	27		**सीता-हनुमान सम्वाद ::** राम का निनि०स्वरूप **सच्चिदानंद** है जो सभी देहों के भीतर जीवात्मा के रूप में बैठा है । अब प्रसंग से **मेरा स्वरूप** सुनो, ईश्वर-जीव दोनों के देह मैं उत्पन्न करती हूँ राम तो द्रष्टा साक्षी मात्र एवं अकर्म हैं सारे कर्म मुझ प्रकृति में हैं, सत्य-ज्ञान-आनंद से पूर्ण राम की शक्ति पाकर मैं 'पुरुष की छाया के समान' राम से ही उत्पन्न होती हूँ ।	
14	OCT 14.mp3	33		जीव-ईश्वर के बीच व्यवधान **'माया'** आ गयी है इसके ३रूप हैं १ **मल**-अनेक जन्मों के पाप २ **विक्षेप**-मन की चंचलता ३ **आवरण** - अपने ब्र० स्वरूप को न जानना, इन व्यवधानों को हटाने के लिये भ० ने **'कर्म-उपासना-ज्ञान'** वेद कहा है, **नवधा भक्ति निरूपण**	ब
15	OCT 15.mp3	33		सीताजी का हनुमानजी को **भ० राम का निनि०**स्व०निरूपण **- 'रामं विद्धि परंब्रह्म सच्चिदानंद अद्वयं',** सभी शरीरों में बैठकर देखने वाला **'मैं'** अहंतत्त्व जीवात्मा रूप से राम ही है यही राम का निनि० स्व० है, मेरा स्वरूप महामाया शक्ति-प्रकृति है, सभी शरीरों की उत्पत्ति पालन संहार का काम 'मैं' करती हूँ, राम अकर्म हैं - सभी कर्म मुझमें हैं + **सहस्त्रमुख रावण एवं महाकाली प्रसंग**	
16	OCT 16.mp3	38		**राम-लक्ष्मण सम्वाद ::** हे प्रभो ! **ज्ञान वैराग्य** और **माया** क्या है ? **भक्ति** का क्या स्वरूप है जिसके कारण आप भक्त के वश में हो जाते हैं ? **ईश्वर** और **जीव** का स्वरूप भी मुझे समझाकर बतायें जिससे शोक मोह और भ्रम का नाश हो ।	Smp 1
17	OCT 17.mp3	27		सृष्टि के आदि में एक अकेला ब्रह्म ही था जिसने विद्यारूप माया उपाधि से **सगुण-निराकार** अर्थात 'ईश्वर' रूप से प्रथम जीव 'ब्रह्मा' को उत्पन्न किया जिन्हें शोक मोह से ग्रस्त देखकर **सगुण-साकार** 'चतुर्भुज विष्णु' रूप धारण कर ज्ञान का उपदेश दिया :: **सनि० ससा० निनि० ब्रह्म का स्वरूप निरूपण**	
18	OCT 18.mp3	43		सर्वदुःखों से मुक्त करने में सक्षम **५ मातायें :::** १ **जन्मदात्री** २ जन्मभूमि ३ ज्हान्वी ४ सुरभी ५ वेद, मनुष्यों को शिक्षा देने के लिये **भगवान विष्णु** का **'राम'** अवतार तथा **रामचरित्र दर्शन**	1
19	OCT 19.mp3	31	चतुर्श्लोकी भागवत् १	ब्रह्मा सत्-जा०, असत्-स्व०, परे-सु०, पहले और पश्चात **एक मैं ही हूँ,** जो जा०स्व०सु०को प्रकाशता है वह ब्रह्म है, जीवात्मा मेरा ही स्वरूप है, आत्मा परमात्मा से अभेद हैं, छाया के समान जगत की झूठी प्रतीति मेरी माया है मेरी दृश्यमान माया मुझे ढके रहती है, मैं ही देखता हूँ किन्तु दिखाई नहीं पड़ता, **कार्य में कारण का अन्वय एवं कारण में कार्य का व्यतिरेक होता है**	विशेष
20	OCT 20.mp3	35		भगवान के ज्ञान का साधन **५ मातायें व उनकी महिमा ::**१ जन्मदात्री २ जन्मभूमि ३ सुरभी ४ ज्हान्वी ५ वेद । माता ही पिता को बतलाने में सक्षम है, मन्दालसा का नवजात पुत्र को उपदेश :: तेरा स्वरूप नित्य शुद्ध बुद्ध ब्रह्म है, जीव मोह निद्रा में सोया जगत का स्वप्न देख रहा है ।	2
21	OCT 21.mp3	49	1	सामवेद छा०उ०-७वाँ अध्याय : **नारद सनतकुमार सम्वाद**, नारदजी द्वारा अपनी विद्या का वर्णन व सनतकुमारों से ज्ञान की प्रार्थना	
22	OCT 22.mp3	30	चतुर्श्लोकी भागवत् २	अद्वितीय ब्रह्म से छायारूप **माया** का प्रादुर्भाव हुआ, विद्या-अविद्या में पड़े ब्रह्म के प्रतिबिम्ब ने क्रमशः **ईश्वर** व **जीव** का रूप धारण किया, ईश्वर की कल्पित **समष्टिसृष्टि**- ईक्षण व प्रवेश पर्यन्त-जगत, जीव की **'व्यष्टिसृष्टि'**- जा०स्व०सु० + बन्ध मोक्ष । माया रचित व्यष्टि-समष्टिसृष्टि झूठी है उनमें पड़े प्रतिबिम्ब जीव-ईश्वर भी कल्पित होने से झूठे हैं, अतः **'ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या'**	विशेष
23	OCT 23.mp3	55	2	सामवेद छा०उ०-७वाँ अध्याय :**नारद सनतकुमार सम्वाद**, नारदजी द्वारा अपनी विद्या का वर्णन, 'ईश्वर-वेद-गुरु-आत्म' **४कृपाऐं**	
24	OCT 24.mp3	33		**माया की महिमा** :: निद्रा ही माया है, जीव को स्वप्न में अघटित भी घटित होता दीखता है, जैसे **जीव** की माया शक्ति यानि **'व्यष्टिनिद्रा'** स्वप्न-जगत उत्पन्न करती है वैसे ही **ईश्वर** की माया शक्ति **'समष्टिनिद्रा'** से जागृत-जगत उत्पन्न होता है	

25	OCT 25.mp3	55			3	सामवेद छा०उ०-७वाँ अ०:**नारद सनतकुमार सम्वाद**, नारद का अपने अध्ययन का वर्णन, भ०जगत के अभिन्न निमित्तोपादान कारण	
26	OCT 26.mp3	31				**गीता-१८/४२-४४ : श्रीभगवानुवाच** – मनुष्य के श्रेय हेतु मैंने 'कर्म उपासना ज्ञान' ३ योग कहे हैं, **ज्ञान** ही **श्रेय** या नित्यसुख स्वरूप सच्चिदानंद है, इसके विपरीत **प्रेय** सुख अनित्य आत्मसुख का प्रतिबिम्ब या प्रतीति मात्र है। वर्णाश्रमानुसार वेद विहित – **'विशेष एवं सामान्य'** निष्काम कर्म-आचरण ही **कर्मयोग** है। त्रि०माया से मैं ४वर्णों को उत्पन्न करता हूँ, **४रों वर्णगुणों का निरूपण**	*1*
27	OCT 27.mp3	40			4	सामवेद छा०उ०-७वाँ अ०: **नारद सनतकुमार सम्वाद**, नारद का अपने अध्ययन का वर्णन, तर्क विद्या दृ०, क्षण मात्र में मायापति ईश्वर अपनी महामाया शक्ति या प्रकृति/प्रणव/ओंकार द्वारा विश्व-विराट रूप धर लेते हैं अतः प्रकृति माता व ईश्वर पिता हैं।	
28	OCT 28.mp3	31				त्रि०वेद के **ज्ञानकाण्ड निरूपण** : भगवान से प्रकट वेदों का प्रयोजन जगत के मातापिता भगवान को बताना ही है तदोपरांत वेद निष्प्रयोजन हो जाते हैं, भगवान को पाये बिना जीव इस दुःखालय संसार-समुद्र को पार नहीं कर सकता, वेद नौका व गुरु केवट है, वेद का ज्ञान ही संसार-समुद्र से पार होना है, **'अहं'** का सच्चा अर्थ **ब्रह्म** है शरीर नहीं, देह तो नौका है जिसमें हम बैठे हैं	*2*
29	OCT 29.mp3	36			5	सामवेद छा०उ०-७वाँ अ०: **नारद सनतकुमार सम्वाद**, तर्कविद्या की स्तुति एवं **छः प्रमाण** निरू०: १ प्रत्यक्ष २ अनुमान ३ उपमान ४ अर्थापत्ति ५ अनुपलब्धि ६ शब्द/वेद । **'शब्द प्रमाण' श्रेष्ठतम है** जो ब्रह्मज्ञान कराने वालानेत्र है अन्य प्रमाण नहीं, **ब्रह्मोपनिषद** :: जिसमें जगत उपन्न स्थित एवं विलीन होता है वह ब्रह्म है –**"तत्वमसि"**– यानि जीव वही तेरा स्वरूप है	
30	OCT 30.mp3	32				भगवान के ज्ञान में **'मल विक्षेप आवरण'** ३ व्यवधान हैं जिन्हें हटाने के लिये भगवान ने **'कर्म उपासना ज्ञान'** रूप वेद कहा है, हमें नट की भाँति अपने ब्रह्म स्वरूप को भूले बिना शरीर रूपी वस्त्रानुसार वेदविहित कर्म करने चाहिये, वस्त्रधारी वस्त्र नहीं हो जाता	२१
31	OCT 31.mp3	53			6	सामवेद छा०उ०-७वाँ अ०: **नारद सनतकुमार सम्वाद,** नारदजी द्वारा अपनी विभिन्न विद्याओं का वर्णन, इन्द्रपुत्र जयन्त का प्रसंग	
32	OCT 32.mp3	43			7	सामवेद छा०उ०-७वाँ अ०: **सनतकुमार द्वारा आत्मज्ञान का उपदेश ::** हे नारद **'भूमा'**/महान/ब्रह्म ही सुख रूप है अल्प में सुख नहीं है अल्प नाशवान है अतः भूमा को ही जानना चाहिये। **भूमा तत्त्व निरूपण** :- जहाँ इन्द्रिय मन बुद्धि आदि की पहुंच नहीं है पर जो इनका द्रष्टा है वह भूमा है। जो इन्द्रिय मन बुद्धि से जाना जाता है वह अल्प है। द्रष्टा ब्रह्म सत् है दृश्य माया असत् है	**अति विशेष**
33	OCT 33.mp3	28				अ०रा० प्रथमसर्ग-रामहृदय :: सीताजी द्वारा हनुमानजी को **भ० राम का निनि० स्वरूप निरूपण** :: 'रामं विद्धि परमब्रह्म सच्चिदानंदम् अद्वययं, सर्वोपाधि विनिर्मुक्तं सत्तामात्रं अगोचरं। आनंदम् निर्मलं शांतं निर्विकारं निरंजनं, सर्वव्यापिनात्मानं स्वप्रकाशं अकल्मषं'	
34	OCT 34.mp3	44				**ब्रह्म** का १ **स्वरूप लक्षण**-सत्यं ज्ञानं अनंतं ब्रह्म २ **तटस्थ लक्षण**-जगत जिसमें एकदेशीय कदाचित व व्यावर्तक है, **जीव** का स्वरूप-'ये ऐषः हृदि अंतरज्योर्ति पुरुषः'। **महावाक्य 'तत्त्वमसि'** द्वारा 'जीव-ब्रह्म'का एकत्व । चिदाभास को संसार का ज्ञान **वृत्तिव्याप्ति** एवं **फलव्याप्ति** द्वारा होता है किन्तु **चिदाभास को ब्रह्मज्ञान में 'महावाक्य/शब्द प्रमाण' की वृत्तिव्याप्ति ही पर्याप्त है**, क्योंकि ब्रह्म स्वयं ज्ञानप्रकाश रूप है अतः ब्रह्म को जानने में चिदाभास या फलव्याप्ति का कोई उपयोग नहीं, वह ब्रह्म में ही समा जाता है	**अति विशेष एवं प्रमुख**
35	OCT 35.mp3	36				भगवान के ज्ञान का साधन **५ मातायें व उनकी महिमा ::** १ जन्मदात्री २ जन्मभूमि ३ सुरभी ४ ज्हान्वी ५ वेद ।	